ज्ञान शांति मैत्री

नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

पर्यावरण एवं सामाजिक जागरूकता पर
डॉ. राजाराम त्रिपाठी का व्याख्यान

वर्धा, 15 जनवरी, 2019. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र में **'पर्यावरण एवं सामाजिक जागरूकता'** विषय पर शोध-वार्ता के तहत व्याख्यान आयोजित हुआ। इस मौके पर छत्तीसगढ़ के बस्तर से आए पर्यावरणविद **डॉ. राजाराम त्रिपाठी** बतौर मुख्य वक्ता मौजूद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के समाजविज्ञान संकाय के अध्यक्ष **प्रो. कृपाशंकर चौबे** ने एवं संचालन केंद्र के सहायक प्राध्यापक **डॉ. मुकेश कुमार** ने किया। धन्यवाद ज्ञापन केंद्र के सहायक प्राध्यापक **डॉ. मिथिलेश कुमार** ने किया।

डॉ. राजाराम त्रिपाठी ने कहा कि मनुष्य की जबसे विकास यात्रा प्रारम्भ हुई, उसी समय से विकास के नाम पर एक किस्म की पागल दौड़ शुरू हो गई। इस दौड़ में बाजार अपने व्यापक रूप में शामिल हो गया। विकास बाजार के कंधे पर सवार होकर आगे दौड़ने लगा। इसने

प्रकृति-पर्यावरण और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। पृथ्वी पर लगभग सत्तर लाख प्राणी हैं। इनमें से बहुतों का अस्तित्व आज खतरे में है। क्योंकि मनुष्य ने यह तय करना शुरू कर दिया है कि इनमें से कौन सा प्राणी जिंदा रहेगा और कौन नहीं।मनुष्य द्वारा यह निर्धारित करना प्रकृति के उसूलों को भंग करना था। प्रकृति में हर चीज संतुलित तरीके से समायोजित हैं। इसके अमर्यादित दोहनसे संकट पैदा होता है।

आगे उन्होंने कहा कि पूरे विश्व में जल संकट तेजी से गहराता जा रहा है। भूगर्भ का जलस्तर भी तेजी से नीचे गिर रहा है। वर्तमान में भारत के एक तिहाई जिले का पानी पीने योग्य नहीं है। इसमें ओर्सेनिक, फ्लोरीन एवं आइरन काफी मात्रा में है, जिसे मनुष्य नहीं पचा सकता है। कृषि कार्य में भी भूगर्भ के पानी का बेरहमी से इस्तेमाल किया गया है। 1120 लीटर पानी बासमती के एक किलो चावल उपजाने में खर्च होता है। कृषि में बड़े पैमाने पर कीटनाशक व रासायनिक खाद आदि का बड़े पैमाने का इस्तेमाल किया जा रहा है। यह बारिश के पानी के साथ

जलस्रोतों में जा मिलता है। केवल दीमक को मारने हेतु तकरीबन सात हजार करोड़ रुपए का जहर हर साल उपयोग किया जाता है। जबकि दीमक को मारने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि दीमक जिंदा पेड़ को कोई नुकसान ही नहीं पहुंचाता। यहाँ सबसे अहम बात तो यह है कि दीमक को मारने का हक मनुष्य को किसने दिया है! किसी एक कीड़े के मारने से पूरी पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। सच्चाई तो यह है कि दीमक सूखी लकड़ियों को खाकर सबसे उपजाऊ मिट्टी बनाता है। अगर दीमक न होता तो हमें उपजाऊ मिट्टी नहीं मिलती। केचुआ भी मिट्टी बनाता है, किन्तु केंचुए और दीमक में फर्क है। केंचुआ जहां सड़ी हुई लकड़ी अथवा अन्य गीले पदार्थ को ही खा सकता है

किन्तु दीमक सूखी लकड़ी से मिट्टी बनाने में माहिर होता है। मानव सभ्यता के विकास में दीमक का अहम योगदान है, किन्तु आज मनुष्य दीमक के खात्मे में लगकर अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मार रहा है।

आज तैंतीस लाख टन कागज हर वर्ष पैकेजिंग के नाम पर खर्च किया जा रहा है। 1991 में जहां सात हजार टन प्लास्टिक की खपत की जा रही थी वहीं आज 56 लाख टन प्लास्टिक का एक साल में इस्तेमाल किया जा रहा है। इसकी कीमत पेड़ और जंगलों को चुकाना पड़ रहा है। आज जंगल इसकी कीमत चुका रहा है, किन्तु कल पूरी मानव सभ्यता को इसकी कीमत चुकानी होगी। इस तरह मनुष्य खुद प्रलय की परिस्थिति का सृजन कर रहा है। जंगल के खत्म होने से बारिस प्रभावित हो रही है। इससे कृषि उत्पादन व लागत प्रभावित हो रहा है। किसान कर्ज तले दबकर आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं। पंजाब के किसान पूर्व में एक एकड़ खेत में चालीस किलो यूरियाखाद डालते थे, किन्तु आज 240 किलो यूरिया खाद डालने पर भी पहले जितना उत्पादन नहीं हो पा रहा है। जमीन की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है। मिट्टी की संरचना बदलती जा रही है। कई तरह की दूसरी समस्याएँ भी पैदा हो रही है। जिन क्षेत्रों में सबसे पहले हरित क्रान्ति हुई थी, उस क्षेत्र में कैंसर की बीमारी बढ़ती जा रही है। ज़मीनें विषाक्त बनती जा रही हैं। आने वाली पीढ़ियाँ हमें माफ नहीं करेगी। क्षणिक लाभ के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को बुरी तरह नष्ट कर दिया गया।

भारत पिछले दस वर्षों में सबसे ज्यादा कचरा उत्पादक देश बन गया है। कंप्यूटर के कचरे, जिसमें हानिकारक धातु हैं, उसका बड़े पैमाने पर आयात किया जा रहा है। पर्यावरण को लेकर पूरी दुनिया बहुत चिंतित है तथा पर्यावरण के रिसर्च में खूब सारा पैसा खर्च हुआ, सेमिनार हुए, मीटिंग हुई, कांफ्रेंस हुए, एनजीओ बने लेकिन उसके बावजूद वैश्विक स्तर पर कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। पर्यावरण के मुद्दे पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि पर्यावरण के विनाश का कारण औद्योगिक विकास रहा है। कहीं न कहीं यह विकास पर्यावरण का विरोधी रहा है। इस विकास से पर्यावरण को कुछ मदद हो रही हो ऐसा केवल कुछ ही टेक्नोलॉजी में दिखता है- जैसे नदी के पानी को साफ करने आदि में विज्ञान ने हमारी कुछ चीजों को रूपांतरित करने में मदद की। अततः नुकसान मनुष्य का ही हुआ है कार्बन डाई-आक्साइड को केवल पेड़-पौधे ही ऑक्सीज़न में रूपांतरित कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि देश-दुनिया को पर्यावरण का ककहरा फिर से सिखने तथा पर्यावरण के वर्णमाला को फिर से समझने और पढ़ने की जरुरत है। पर्यावरण के साथ ताल-मेल बैठा कर कैसे जिए इसके लिए हमें अपने जनजातीय एव वनवासीय समुदाय में वापस लौटना होगा। आदिवासी समुदाय पिछले 4 लाख साल से प्रकृति के साथ बिना डॉक्टर एव दवाईयों के हमसे बेहतर गुणवत्ता के साअथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सुनने में आता है कि आदिवासी बहुत पिछड़े और बहुत दुखी हैं लेकिन ऐसा नहीं है। बगैर एयर कंडीशन एवं पक्का घर के बावजूद वह हमसे बेहतर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उनके 40-45 साल तक बाल भी नहीं पकते। उनका जीवन बिना प्रकृति को नष्ट किए हुए बेहतर चलता है। उनकी जीवन शैली को समझने की जरूरत है तथा उनके बीच जाकर उनसे सिखने की जरूरत है।

उक्त अवसर पर केंद्र के प्राध्यापक डॉ. शिवसिंह बघेल, डॉ. पल्लवी शुक्ला, गजानन एस. निलामे, डॉ. उमेश कुमार सिंह के साथ-साथ एमफिल-पी-एचडी के शोधार्थी आशुतोष पाण्डेय, श्याम सिंह, अभिषेक गुप्ता, प्रेम नायक उपस्थित थे। मौके पर केंद्र के एमएसडबल्यू-बीएसडब्ल्यू के दर्जनों छात्र-छात्राएँ क्रमशः रविचन्द्र, गणेश बोरकर, रक्षा महाजन, पूजा ताकसांडे, औरंगजेब, प्रणय कांबले, निलेश फूलमाली, सुधीर कुमार, देवेन्द्र, ब्यूटी, गायत्री, नेहा साव, सोनल राजहंस, अश्विनी, नितेश धुर्वे आदि मौजूद थे।